मूल सिद्धांत

फ्रैंकलीन द्वारा तैयार नोट्स

1. परमेश्वर

परमेश्वर का अस्तित्व
परमेश्वर के गुण
परमेश्वर की त्रिएकता

2. मनुष्य

मनुष्य का आरंभ
मनुष्य सिद्ध रचा गया
परमेश्वर ने मनुष्य को क्यों रचा ?

3. पाप

पाप क्या है ?
पाप की उत्पत्ति
किस प्रकार पाप ने जगत में प्रवेश किया
पाप के परिणाम

4. उद्धार

प्रस्तावना
उद्धारकर्त्ता – यीशु मसीह
यीशु मसीह का परमेश्वरत्व
मनुष्य बन जाना
यीशु मसीह की मृत्यु तथा लहु का बहाया जाना
मेरा स्थान लिया – एवज़ी
मेरा पाप क्षमा किया
मुझे छुड़ाता है
मुझे सिद्ध करता है
मेरा मेल कराया
मुझे शुद्ध किया
मुझे चंगा किया

क्या होता है जब कोई यीशु मसीह पर विश्वास करता है ?
पाप के लिये सिर्फ यीशु मसीह का लहु ही परमेश्वर को संतुष्ट करता है।
उद्धारकर्त्ता का पुनरुत्थान
सिंहासन पर विराजमान उद्धारकर्त्ता
उद्धारकर्त्ता से उद्धार प्राप्त करना
उद्धार का भूत, वर्त्तमान और भविष्य

मूल सिद्धांत / परमेश्वर

फ्रैंकलीन द्वारा नोट्स

1. परमेश्वर

1. प्रस्तावना : यर्मयाह 9:24 दानिय्येल 11:32 होशे 6:3,6 यूहन्ना 17:3

2. परमेश्वर का अस्तित्व इब्रानियों 11:6 उत्पत्ति 1:1

क) प्रत्येक मनुष्य यह जान ले कि परमेश्वर है। रोमियो 1:18–32 ।।

ख) "कार्य – कारण" का तर्क। जो कुछ है, उसके अस्तित्व का कारण उसका रचयता है। हमारे पास यदि घड़ी है ; तो घड़ीसाज़ अवश्य है। हमारे पास पुस्तक है ; तो लेखक अवश्य है। हमारे पास सृष्टि है ; तो सृष्टिकर्त्ता अवश्य है। यह सृष्टी अस्तित्व में बिना किसी बुद्धिमान और निजी सृष्टीकर्त्ता के स्वयं नहीं आ सकती थी, जैसे बिना किसी लेखक के, वर्णमाला पुस्तक नहीं बन जाती।

ग) भजन संहिता 14:1 : मूर्ख ने अपने मन में कहा है, "परमेश्वर है ही नहीं।"

3. परमेश्वर के गुण – परमेश्वर अनन्त है – असीमित है

क) अनन्त – समय की सीमा मे बंधा नहीं – अनन्त जीवन

- उत्पत्ति 1:1 — "आदि में परमेश्वर ने" प्रकाशितवाक्य 22:13
- यशायाह 9:6 — अनन्त पिता
- इब्रानियों 9:14 — अनन्त आत्मा
- इब्रानियों 1:8 — पुत्र ... ... युगानयुग का
- यूहन्ना 1:4 ; 5:26 — प्रेरितों के काम 17:25
- यशायाह 42:5 — 1 तीमुथियुस 1:17 ; 6:16

ख) सर्वशक्तिमान – असीमित शक्ति – सबका सृष्टिकर्त्ता

- उत्पत्ति 1:1 — आकाश और पृथ्वी
- उत्पत्ति 17:1 — एल शड्‌ाई – सर्वशक्तिमान परमेश्वर

- उत्पत्ति 18:14 — " क्या यहोवा के लिए कुछ भी असम्भव है "
- अय्यूब 26:7 — " वह बिना टेक पृथ्वी का लटकाए रखता है "
- मत्ती 19:26 — " ... परमेश्वर के लिए सब कुछ सम्भव है।"
- लूका 1:37 — " क्योंकि परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है "
- भजन 103 : 19 — उसका राज्य पूरी सृष्टि पर है।
- यशायाह 42:5 43:10 – 13 45:12,18 48:12–13

ग) सर्वज्ञानी – ज्ञान या बुद्धि में सीमित नहीं है।

- यशायाह 40:28 भजन संहिता 147:5 रोमियों 11:33
- सौर मण्डल का क्रम ; चिड़ियां जो उड़ती है ; पानी में मछली

घ) सर्व उपस्थित – स्थानों के द्वारा सीमित नहीं है।

- भजन संहिता 139:7–10 इब्रानियों 4:13

ङ) वह धार्मिकता में सीमित नहीं है (व्यावहारिक रीति से सही)

- लैव्यव्यवस्था 11:45 ; 19:2
- होशे 14:9
- यशायाह 6:3 ; 1 पतरस 1:14–16 ; 2:21–22 ; प्रकाशितवाक्य 4:8

च) वह न्याय में सीमित नहीं है (न्यायिक रीति से सही)

इसलिए वह हर आज्ञा उल्लंघन / पाप का न्याय अवश्य करेगा और दण्ड देगा।

- यूहन्ना 5:30 ; 8:16 रोमियों 3:4, 26
- भजन संहिता 51:4 नीतिवचन 11:1लैव्यव्यवस्था 19:35–36

छ) असीमित प्रेम

- 1 युहन्ना 4:8 1 कुरिन्थियों 13:4–8
- नीतिवचन 10:12 इसलिए परमेश्वर अपने पुत्र का न्याय करके हमारे पापों को क्षमा कर देता है।
- इफिसियों 2:4–8 उसके प्रेम से दया और अनुग्रह प्रकट हुए।

प्रश्न : यदि परमेश्वर प्रेम है, तो वह कैसे किसी को नरक भेज सकता है ?

प्रश्न : यदि परमेश्वर सिद्ध पवित्र है, तो वह कैसे किसी को स्वर्ग भेज सकता है ?

हमारा अध्ययन इन दोनों प्रश्नों का स्पष्ट उत्तर देगा।

परमेश्वर की त्रिएकता

फ्रैंकलीन द्वारा

1. परिचय

त्रिएकता का अर्थ है कि एक परमेश्वर के अन्दर और उसे पूर्ण करते तीन व्यक्ति हैं : पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा।

व्यवस्थाविवरण 6:4 : " हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है।

एक परमेश्वर, तीन व्यक्तियों में प्रकट : पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा।

इफिसियों 4:4–6 "एक ही देह है, और एक ही आत्मा ; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा। और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर, और सब के मध्य में, और सब में है।" सब एकत्व का उल्लेख करते हैं।

विचार, उद्देश्य, वाचा, क्रिया और कामों में एक।

2. पुराने नियम में त्रिएकता

पुराने नियम में त्रिएकता का सिद्धांत स्पष्ट नहीं है, परन्तु वो है।

क) त्रिएकता के तीन व्यक्तियों का ज़िक्र, बहुवचन का प्रयोग कर के किया गया है।

- 📖 उत्पत्ति 1:1 "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।"
- 📖 परमेश्वर – एलोहिम – इब्रानी में – बहुवचन

नए नियम हमें बताता है कि परमेश्वर के पुत्र ने सारे जगत को रचा।

- 📖 उत्पत्ति 1:1 का परमेश्वर और परमेश्वर का पुत्र, एक हैं।
- 📖 यूहन्ना 1:3,10 ; इफिसियो 3:9 ; कुलुस्सियों 1:16 इब्रानियों 1:2
- 📖 उत्पत्ति 1:26 "फिर परमेश्वर ने कहा, '<u>हम</u> मनुष्य को अपने स्वरुप में...।'
- 📖 उत्पत्ति 3:22 " देखो, यह मनुष्य भले और बुरे का ज्ञान पाकर <u>हम</u> में से एक के समान हो गया है।'
- 📖 यशायाह 6:3 " पवित्र, पवित्र, पवित्र "
- 📖 यशायाह 6:8 " मैं किसको भेंजूं , और <u>हमारी</u> ओर से कौन जाएगा ? "

ख) परमेश्वर को विभिन्न नामों से पुकारा तथा प्रकट किया गया है।

- ✎ परमेश्वर का आत्मा का अकसर उल्लेख किया गया है। जैसे उत्पत्ति 1:2

✐ परमेश्वर के पुत्र का उल्लेख "मेरा दास" कह कर किया गया है। यशायाह 52:13 – 53

✐ यशायाह 9:6 एक जो उत्पन्न होगा "पराक्रमी परमेश्वर" और "पिता" होगा।

3. नए नियम में त्रिएकता

लूका 1 : 30 – 35
देहधारण करना : पुत्र – परम प्रधान का – पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ धारण। भजन संहिता 2:7 और यशायाह 42:1 का पूरा होना।

मत्ती 3:16–17, हम मसीह को पानी में बपतिस्मा लेते हुए, पिता को स्वर्ग से बोलते हुए और पवित्र आत्मा को कबूतर की नाई उतरते हुए देखते हैं। हमें " पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा " के नाम से बपतिस्मा देना है, नामों से नहीं। (मत्ती 28:19)

क) पिता को परमेश्वर के रुप में पहचाना जाता है।

यूहन्ना 17:3	रोमियों 1:7	यशायाह 9:6
1 पतरस 1:2	यूहन्ना 1:18	

ख) यीशु मसीह का ईश्वरत्व – वह परमेश्वर है।

i) पुराने नियम का यहोवा ही नए नियम का यीशु है।
यशायाह 44:6 ; 41:4 ; 48:12 प्रकाशितवाक्य 1:8,17 ; 22:13

ii) वह अनन्त है। केवल परमेश्वर ही अनन्त है।
1 तीमुथियुस 1:17 ; 6:14–16 ; मीका 5:2 ; इब्रानियों 13:8

iii) वह परमेश्वर है तथा सब उसने सब वस्तुओं को सृजा।
यूहन्ना 1:1–4, 14, 18 ; कुलुस्सियों 1:16

iv) वह सब वस्तुओं को सम्भालता है। इब्रा 1:3 ; कुलुस्सियों 1:17

v) ईश्वरत्व की परिपूर्णता उसमें वास करती है। कुलुस्सियों 2:9

vi) परमेश्वर के स्वरुप और परमेश्वर के तुल्य अस्तित्व में होना। फिलिप्पियों 2:6

उसे मनुष्य या स्वर्गदूत नहीं कहा जा सकता। कुछ लोगों का विचार है कि वह पहले स्वर्गदूत के समान था। ध्याने दें :– इब्रानियों 2:16

vii) यह उसके पूर्व अस्तित्व और यह कि वो ही पुराने नियम का यहोवा है, के विषय में बताता है। यूहन्ना 8:51–59 निर्गमन 3:14

viii) पिता के द्वारा उसे परमेश्वर कहा। इब्रानियों 1:8 तीतुस 2:13

ix) पापों को क्षमा करता है। केवल परमेश्वर ही पापों को क्षमा कर सकता है। लूका 5:20–24

x) उसने कहा कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार उसे दिया गया है। सिर्फ परमेश्वर के पास सारा अधिकार है। मत्ती 28:18

xi) यीशु ने परमेश्वर का पुत्र और प्रभु होने का दावा किया। मत्ती 22:42–45 लूका 22:67–70 ; 23:3

xii) प्रेरितों ने त्रिएकता का प्रचार किया : प्रेरितों के काम 2:32–33 ; 5:29–32 ; 10:38

वह पानी पर चला। हवा और लहरों ने उसकी आज्ञा मानी। बिमारों का चंगा किया, मृतकों को जीवित किया। अन्धों को दृष्टि दी, बहरों को सुनने की शक्ति दी। लंगड़े चले। दुष्ट आत्माएं निकाली । पानी को दाखरस बनाया और छोटे बालक के भोजन से 5000 लोगों को खिलाया।

ग) पवित्र आत्मा का ईश्वरत्व – वह परमेश्वर है।

पवित्र आत्मा को परमेश्वर के रुप में पहचाना गया है। प्रेरितों के काम 5:3–4

परमेश्वर की सम्पूर्णता मनुष्यों के ऊपर कार्य करती हुई , मनुष्यों को पापों के विषय में कायल करते हुए : यूहन्ना 16:7–11

तथा विश्वासी को सब सत्य का मार्ग बतलाते हुए : यूहन्ना 16:12–15

पवित्र आत्मा प्रभु और परमेश्वर है :

2 कुरिन्थियों 3:17 ; यूहन्ना 4:24 ; प्रेरितों के काम 5:3–4

- ✎ सर्व उपस्थित — भजन संहिता 139 : 7 – 10 (आत्माएं नहीं होती)
- ✎ सर्व सामर्थी — यूहन्ना 6:63 2 कुरिन्थियों 3:6 अय्यूब 33:4
- ✎ सर्व ज्ञानी — 1 कुरिन्थियों 2:9–12
- ✎ अनन्त — इब्रानियों 9:14

घ) पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा की अभिन्नता और एकता

यूहन्ना 6:63	"आत्मा तो जीवन दायक है"
यूहन्ना 1:4	"उसमे (वचन में) जीवन था"
यूहन्ना 14:17	"अर्थात सत्य का आत्मा"
यूहन्ना 4:24	"परमेश्वर आत्मा है"

यूहन्ना 14:6 "मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूं "

1 कुरिन्थियों 15:45 "अन्तिम आदम जीवन दायक आत्मा बना"

रोमियों 8:2,9–11

जीवन का आत्मा = परमेश्वर का आत्मा = मसीह का आत्मा = पिता का आत्मा

ड़) पिता और पुत्र की एकता और अभिन्नता

यूहन्ना 10:30, 31, 33, 38 ; 12:45; 14:7–10 ; 17:21–23

'जीज़स ओनली' (सिर्फ यीशु) की शिक्षाऐं 'परमेश्वर की एकता' पर प्रहार करती हैं तथा यह पवित्र शास्त्र के प्रकाशन के विरुद्ध है। जब पुत्र का आदर और महिमा होती है तो पिता डाह या ईर्ष्या नहीं करता। वह आनन्दित होता है।

जब पुत्र का आदर और महिमा होती है तो पवित्र आत्मा डाह या ईर्ष्या नहीं करता। वह भी आनन्दित होता है।

त्रिएकता का हर जन अपनी व्यक्तिगत महिमा या पहचान नहीं चाहता, परन्तु अपने दूसरे जन को ऊंचा उठाता है, जैसे कि इन निम्न लिखित वचनों में वर्णन किया गया है।

यूहन्ना 16 : 14	पवित्र आत्मा यीशु की महिमा करता है।
लूका 12 : 10	यीशु पवित्र आत्मा का आदर करता है।
फिलिप्पियों 2:9	पिता पुत्र का आदर करता है। कुलुस्सियों 1:19
यूहन्ना 8:29 ; 14:13 ; 17:4	पुत्र पिता का आदर करता है।

उपरोक्त से ऐसा प्रतीत होता है कि जो व्यक्ति पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा लेता है, वह आनन्दित होता है कि उसे ग्रहण किया गया और ऊंचा उठाया गया है।

मनुष्य की शिक्षा विभाजित करती है परन्तु प्रभु की सत्य शिक्षा एक करती है।

मूल सिद्धांत / मनुष्य

फ्रैंकलीन द्वारा नोट्स

2. मनुष्य

क. मनुष्य की शरुआत, मनुष्य कहां से आया ?

✎ उत्पत्ति 1 : 26 – 28 ; 2:7, 18, 21 – 25

ख. मनुष्य जब सृजा गया तब उसकी क्या स्थिति थी ?

1. सिद्ध :
   - ✎ अनन्त, बिना पाप, रोग और मृत्यु का।
   - ✎ परमेश्वर के साथ चलता था। उत्पत्ति 1:31 ; 3:8

2. परमेश्वर के स्वरुप या उसके समान रचा गया :
   - ✎ बड़ी और उन्नत बौद्धिक योग्यता। कुलुस्सियों 3:10
   - ✎ नैतिक तथा धार्मिक। इफिसियों 4:24
   - ✎ स्वतंन्त्र – अपना चुनाव स्वयं कर सकता है। उत्पत्ति 2:16–17
   - ✎ अनन्त प्राणी।

3. तीन भाग वाला प्राणी : आत्मा – प्राण – देह।
   - ✎ उत्पत्ति 2:7 मिट्टी से देह। परमेश्वर के श्वास (आत्मा) से प्राण और आत्मा।
   - ✎ गिनती 16:22 ज़कर्याह 12:1 1 थिस्सलुनीकियों 5:23

ग. परमेश्वर ने मनुष्य को क्यों बनाया ?

1. अपनी महिमा के लिए सृजा। यशायाह 43:7
2. अपनी इच्छा के लिए सृजा। प्रकाशितवाक्य 4:11
3. ताकि परमेश्वर की स्तूति और आराधना हो। इफिसियों 1:12 ; प्रकाशितवाक्य 5:13–14
4. ताकि उसकी सन्तान बन जाऐं, उसका परिवार। वह पिता है।
   यूहन्ना 1:12 ; इफिसियों 3:14–15, 4:6 ; इब्रानियों 2:10–16
5. उसके पुत्र के लिए, कुलुस्सियों 1:16
   - ✎ ताकि उसकी कलिसिया बन जाऐं, कुलुस्सियों 1:18
   - ✎ ताकि उसकी दुलहन बन जाऐं, प्रकाशितवाक्य 19:7 21:2,9
6. ताकि पृथ्वी के ऊपर राज करे। इब्रानियों 2:5–8
7. भले कार्यों के लिए। इफिसियों 2:10

घ. क्या मनुष्य इस सिद्ध दशा में रह पाया ?

मूल सिद्धांत / पाप

फ्रैंकलीन द्वारा नोट्स

3. पाप

क. परिचय

1. मनुष्य पाप को बहुत हल्का से लेता है। नीतिवचन 14:9 " मूर्ख के लिए पाप का अंगीकार करना ठट्ठे की बात है।"

हमारा जन्म पाप की दुनिया में हुआ है। यही वो सब है जो हम जानतें हैं। यह आम जीवन का तरीका है। बिना कोई सवाल किए हम इसे स्वीकार कर लेतें हैं और इसी में जीतें हैं।

2. परमेश्वर की दृष्टि में पाप बहुत बुरा है :
मत्ती 5:29–30 "निकाल कर दूर फेंक दे ... काट कर दूर फेंक दे"
प्रेरितों के काम 5:1–6 हनन्याह और सफीरा का झूठ

ख. पाप क्या है ?

1. 1 यूहन्ना 3:4 पाप परमेश्वर की व्यवस्था का अपराध है।
उदाहरण : मनुष्य का प्रथम पाप : उत्पत्ति 2:16–17

हमें पाप की दुष्टता को दिखाने के लिए, परमेश्वर ने मनुष्य को व्यवस्था दी। व्यवस्था हमें बताती है कि धार्मिकता क्या है।

✎ रोमियो 2:14–15 व्यवस्था प्रत्येक मनुष्य के हृदय में है। परन्तु मनुष्य के पास दागा हुआ विवेक है।(1 तीमुथियुस 4:2)। इसे और भी अधिक स्पष्ट करने हेतु परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था को पत्थर की पट्टी पर लिख दिया और मनुष्य को दे दिया।

✎ गलातियों 3:24 व्यवस्था हमारा शिक्षक बन गया। वह हमें क्या सिखाता है ?

i) रोमियों 3:20 "व्यवस्था के द्वारा पाप का बोध हुआ।"
ii) रोमियों 5:20 व्यवस्था हमें सिखाती है कि पाप क्या है।
iii) रोमियों 7:7 व्यवस्था हमें यह प्रदर्शित करती है पाप क्या है।
iv) रोमियों 7:12 व्यवस्था अच्छी है।
v) यूहन्ना 15:22 यीशु ने हमें बताया कि पाप क्या है
vi) यूहन्ना 16:8 पवित्र आत्मा हमें पाप के विषय में कायल करता है।

2. रोमियों 3:23 पाप परमेश्वर की महिमा से रहित होना है।

3. 1 शमूएल 15:23 पाप परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करना है।

4. 1 यूहन्ना 5:10 पाप अविश्वास है। यह परमेश्वर को झूठा ठहराता है। रोमियों 14:23

5. यशायाह 53:6 अपना जीवन अपने मार्ग अनुसार व्यतीत करना पाप है।
6. 1 यूहन्ना 5:17 "सब प्रकार की अधार्मिकता पाप है"

ग) पाप की उत्पत्ति

1. यहेजकेल 28:11–19
2. यशायाह 14:12–17 "परम प्रधान परमेश्वर के समान"
   2 थिस्सलुनीकियों 2:4 ; प्रकाशितवाक्य 17:4–5

घ) पाप ने जगत में कैसे प्रवेश किया

1. रोमियों 5:12	एक मनुष्य के द्वारा।
2. उत्पत्ति 3:1–24	जब आदम ने पाप किया, तो उसका बीज भ्रष्ट हो गया।
3. भजन संहिता 51:5 ; 58:3	बच्चों को झूठ बोलना सिखाने की ज़रुरत नहीं।
4. रोमियों 5:18	सब मनुष्य दोषी ठहराये गए पापी हैं।
5. रोमियों3:23	सब ने पाप किया।

6. मनुष्य पाप करता है क्योंकि वो स्वभाव ही से पापी है।

ङ) पाप के परिणाम

उत्पत्ति 2:16–17 "तू अवश्य मर जाएगा" परमेश्वर के कहने का क्या अर्थ है ?

1. मृत्यु इफिसियों 2:1 रोमियों 6:23

मृत्यु अस्तित्व को मिटाती नहीं ; उसे अलग कर देती है।

i) पाप की मज़दूरी : आत्मिक मृत्यु है।
- परमेश्वर से जो जीवन है आत्मा और प्राण का अलग हो जाना।
  उत्पत्ति 2:16–17 यशायाह 59:2 यहेजकेल 18:4, 20

ii) पाप की मज़दूरी : शारीरिक मृत्यु है।
- आत्मा और प्राण देह से अलग हो जाते हैं
- जैसे शाखा जो वृक्ष से काट डाली जाती है, मृत ओर मरी हुई होती है।
  उत्पत्ति 3:19
- जब शरीर काम करना बन्द कर देता है और शारीरिक मृत्यु पूर्ण हो जाती है, प्राण और आत्मा परमेश्वर के पास न्याय के लिए लौट जातें हैं।
  भजन संहिता 104:29 ; 90:10 सभोपदेशक 12:7 अय्यूब 34:14–15
  इब्रानियों 9:27

iii) पाप की मज़दूरी : अनन्त मृत्यु है।
- परमेश्वर की दया से अनन्त काल के लिए अलग।
  2 थिस्सलुनिकियों 1:8–9 प्रकाशितवाक्य 20:11–15

परन्तु जिसे प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु द्वारा क्षमा मिल गई है : अनन्त जीवन
लूका 23:46, प्रेरितों के काम 7:59, यूहन्ना 5:24, 2 कुरिन्थियों 5:6–8, फिलिप्पियों 1:21–24, 1 थिस्सलुनिकियों 4:13–18 ।

2. शैतान के नियंत्रण में तथा पाप के दासत्व में

- इफिसियों 2:1–3 रोमियों 6:20
- 2 तीमुथियुस 2:25–26 तीतुस 3:3
- यूहन्ना 8:34

3. आदम नें पृथ्वी का सारा अधिकार शैतान को दे दिया । लूका 4:6

4. आत्मिक सत्य की ओर अन्धे और बहरे – मन अन्धकारमय तथा हृदय भ्रष्ट

- यिर्मयाह 17:9
- 1 कुरिन्थियों 2:14
- 2 कुरिन्थियों 4:4

5. हृदय में भरा है :

- मूर्तिपूजा रोमियों 1:21–23
- अनैतिकता रोमियों 1:24–27
- दुष्टता और बुराई रोमियों 1:28–32

6. पाप सब जगह व्याप्त है – सब मनुष्य उसकी सामर्थ्य में हैं – कोई धर्मी नहीं

- भजन संहिता 130:3
- नीतिवचन 20:9
- सभोपदेशक 7:20 ; 9:3
- रोमियों 3:9–12, 23
- याकूब 3:2, 8
- 1 यूहन्ना 1:8, 10

च) पाप के लिए मनुष्य का उत्तर

1. आत्म धार्मिकता । यशायाह 64:6
2. वह अच्छा जीवन जीने का प्रयत्न करता है । तीतुस 3:5
3. वह परमेश्वर द्वारा दी व्यवस्था से जीने का प्रयत्न करता है। मत्ती 5:21–22, 27–28; रोमियों 10:3
4. दूसरे धर्म और बलिदान । यूहन्ना 14:6 ; इब्रानियों 10:4

यह देखते हुए कि परमेश्वर पाप से इतनी घृणा करता है कि वह दुष्टों का न्याय अनन्त आग की लपटों

से करेगा, इसी प्रकार वह हमारे जीवन में पाप से कितनी अधिक घृणा करता होगा ?

वह पाप को देख कर आंख बन्द नहीं कर लेता।

उसने आदम से यह नहीं कहा, “आगे से ऐसा फिर कभी नहीं होना चाहिए।”

इसके लिए कलवरी के क्रूस पर उसके पुत्र की मृत्यु की ज़रुरत थी।

क्यों यह अध्ययन महत्वपूर्ण है ?

उत्तर :
पापों की क्षमा मांगने के लिए, हमें दो चीज़े जानना आवश्यक है :

1. मैं पापी हूं।

2. यीशु पापियों को बचाने आया।

मूल सिद्धांत /उद्धार

फ्रैंकलीन द्वारा नोट्स

4. उद्धार

क. परिचय

1. उद्धार का अर्थ है : इब्रानी भाषा का शब्द “याशा” जिसका अर्थ है :

- बुराई से छूट जाना, भार से स्वतंन्त्र हो जाना।
- सुरक्षित हो जाना, उन्नति के लिए
- पुनःस्थापित हो जाना
- चंगा हो जाना
- विजय का अनुभव पाना

2. उद्धार बाइबल और सुसमाचार का संदेश है।

- उत्पत्ति 3:21
- यशायाह 45:22–25
- 1 तीमुथियुस 2:3–4

3. उद्धार परमेश्वर की योजना है, न कि मनुष्य या धर्म की।

i) भजन संहिता 3:8	“उद्धार यहोवा ही की ओर से होता है”
ii) योना 2:9	“उद्धार यहोवा ही से होता है”
iii) प्रेरितों के काम 4:12	“सिर्फ एक ही है जिसके द्वारा उद्धार हो सकता है।”
iv) यूहन्ना 14:6	केवल एक ही मार्ग – केवल एक ही उद्धारकर्त्ता

4. मनुष्य मरा हुआ है, वह स्वयं को बचा नहीं सकता। उसके पास अपने पापी स्वभाव को बदल सकने की शक्ति नहीं है। वह मरा हुआ है। उसे जीवन चाहिए।

उसे उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता है

- अय्यूब 14:4
- यूहन्ना 5:40 ; 6:44, 65 ; 17:2
- यिर्मयाह 13:23
- प्रेरितों के काम 11:18
- मत्ती 7:16–18 ; 19:25–26

5. हमने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है। भजन संहिता 51:4
सिर्फ परमेश्वर ही हमें क्षमा कर सकता है। लूका 5:21

परन्तु परमेश्वर धर्मी है। पाप का न्याय अवश्य होना है।

6. सुसमाचार क्या है ?

- रोमियों 1:16–17
- 1 कुरिन्थियों 15:1–4 मृत्यु – गाड़ा जाना – पुनरुत्थान
- इफिसियों 2:8 "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है।"

ख. उद्धारकर्त्ता – यीशु मसीह

इब्रानी संज्ञा "यीशु'ाब" का अर्थ उद्धारकर्त्ता है।
उद्धार करने के लिए आवश्यक है एक ऐसा हो जो बचा सकने में सक्ष्म हो।
सिर्फ परमेश्वर के पास सारा अधिकार और सामर्थ्य है।

- यशायाह 43:3, 11–13 ; 45:21
- 1 युहन्ना 4:14 "पिता ने पुत्र को जगत का उद्धारकर्त्ता करके भेजा है।"
- मत्ती 1:21 ; लूका 2:30 ; 3:6 यीशु को 'परमेश्वर का उद्धार' कहा गया।

1. यीशु मसीह का ईश्वरत्व – वह परमेश्वर है।

i) पुराने नियम का यहोवा ही नए नियम का यीशु मसीह है।
यशायाह 44:6 ; 41:4 ; 48:12 प्रकाशितवाक्य 1:8, 17 ; 22:13
ii) वह परमेश्वर है तथा उसने सब कुछ सृजा : यूहन्ना 1:1–4, 14, 18
कुलुस्सियों 1:16।
iii) सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं। इब्रानियों 1:3 कुलुस्सियों 1:17
iv) परमेश्वरत्व की समस्त परिपूर्णता उसमें वास करती है : कुलुस्सियों 2:9
v) यह उसके पूर्व अस्तित्व को बताते हैं तथा यह कि वह ही पुराने नियम का यहोवा है।
यूहन्ना 8:51–59 निर्गमन 3:14
vi) यह पिता परमेश्वर के साथ उसके एक होने को बताते हैं।
यूहन्ना 10:30, 31, 33।
vii) पिता ने उसे परमेश्वर कहा। इब्रानियों 1:8

वह पानी पर चला। हवा और लहरों ने उसकी आज्ञा माना। बिमारों का चंगा किया, मृतकों को जीवित किया। अन्धों को दृष्टि दी, बहरों को सुनने की शक्ति दी। लंगड़े चले। दुष्ट आत्माओं को निकाला। पानी को दाखरस बनाया और छोटे बालक के भोजन से 5000 लोगों को खिलाया।

2. वह मनुष्य बना। परमेश्वर रहा : परमेश्वर का पुत्र और मनुष्य का पुत्र।

फिलिप्पियों 2:5–11

क) परमेश्वर का पुत्र
क्योंकि पापी मनुष्य को उद्धार की आवश्यकता थी जिसके लिए उद्धारकर्त्ता चाहिए था,और सिर्फ परमेश्वर ही बचा सकता था।

- लूका 5:20 – 24
- 1 तीमुथियुस 1:15 " मसीह यीशु संसार में पापियों का उद्धार करने आया।"

ख) मनुष्य का पुत्र

- सिद्ध बलिदान की आवश्यकता है।
- परमेश्वर यीशु मसीह, ने इस जगत में मनुष्य रुप में जन्म लिया।
  यशायाह 7:14 ; 9:6 लूका 1:31–35 ; 19:10
- हम में से एक के समान हो गया। इब्रानियों 2:14–17; 4:14–15; 1 तीमुथियुस2:3–6
  परमेश्वरत्व का सदस्य मानव परिवार में आया, कि परमेश्रवत्व में हमारे पास मानव परिवार का सदस्य हो।
- एक मनुष्य के द्वारा पाप आया, एक मनुष्य के द्वारा उद्धार आया।
  रोमियों 5:12,18–19
- आदम ने पाप किया और पापियों को जन्म दिया। यीशु ("अन्तिम आदम" "दूसरा आदमी") ने पाप रहित जीवन बिताया और धर्मी लोगों को जन्माया।
  1 कुरिन्थियों 15:21–22 ; 1 पतरस 1:23

ग. यीशु मसीह के लहू बहाये जाने और मृत्यु के द्वारा उद्धार।

1. उसने मेरा स्थान लिया – मेरे बदले में
   - रोमियों 5:6, 8
   - रोमियों 8:32
   - यशायाह 53

2. मेरे पापों को क्षमा करता है।
   - लूका 5:18–24 (20, 24)
   - मत्ती 26:28
   - कुलुस्सियों 2:13–15 — मेरे पापों को क्षमा करता है। (यशायाह 43:25;44:22)
   - इब्रानियों 9:22, 26 — पाप को मिटा दिया
   - इब्रानियों 10:17–19 — स्मरण भी नहीं करता
   - 1 यूहन्ना 1:7 ; 2:12 ; 3:5 — लहू हमें शुद्ध करता है/ माफ़ करता है/हटा लिया
   - प्रकाशितवाक्य 1:5 — हमें मुक्त कर दिया
   - भजन 103:3, 10–12 — हमारे सब अधर्मों को क्षमा करता है।

3. मुझे छुड़ाता है – खरीद का मुल्य दे कर छुड़ा लेना।

i) इस शब्द का अर्थ है : बज़ार में जा कर ख़रीदना।
मनुष्य गुलाम है, "पाप में बिका" (रोमियों 7:14) और पाप के दण्ड में (रोमियों 6:23) परन्तु यीशु मसीह के द्वारा खरीद लिया गया।
1 कुरिन्थियों 6:17–20 ; 7:23 ; भजन संहिता 103:4 ; यशायाह 43:1–4

ii) सब मनुष्यों को खरीदा है और इसलिए उसके पास अधिकार है कि जैसे वो चाहे वैसा उनके साथ करे। 2 पतरस 2:1 तीतुस 2:11–13 इब्रानियों 2:3

iii) मुल्य : भजन संहिता 49:7–8 प्रकाशितवाक्य 5:9 1 पतरस 1:18–19

iv) कब तक के लिए ? इब्रानियों 9:12

4. मुझे सिद्ध करता है अतः मुझे धर्मी बनाता है।

बाइबल में एक युनानी शब्द का अनुवाद करने के लिए दो शब्दों का इस्तमाल किया गया है :

1. सिद्ध कराना एक क्रिया है – जो प्रभु ने किया

2. धर्मी एक संज्ञा है – जो प्रभु है या जो मै हूं।

- वैध : न्यायिक रीति से सही
- सिद्ध : दोष से स्वतंन्त्र, दोषी करार नहीं
- धर्मी : बिना पाप या दोष के। जो अब मैं हूं।

रोमियों 3:21–28

i) पद 21 परमेश्वर की नीतिगत धार्मिकता को व्यवस्था में देखा गया और अब हम इस को मसीह यीशु में ओर उसके उद्धार के कार्य में देखते हैं।

ii) पद 22 उन सब विश्वास करने वालों को परमेश्वर की धार्मिकता प्रदान की जाती है उद्धार के लिए केवल यीशु मसीह में अपना विश्वास रखते हैं।

iii) पद 24 उसके अनुग्रह के दान के द्वारा, हर एक यीशु मसीह के छुटकारे के कार्य पर विश्वास करने के कारण न्यायिक रीति से सिद्ध या सेंत मेंत धर्मी ठहरा दिए जातें हैं। यह मुफ्त दान है। योग्यता अनुसार नहीं। किसी भी तरह से इसे खरीदा या हासिल नहीं किया जा सकता। वह इसे केवल अपने अनुग्रह के द्वारा देता है। इफिसियों 2:8 अ ।

iv) पद 27–28 हम धर्मी ठहराए गए – पाप रहित घोषित किए गए – अपने प्रयत्नों या कार्यों के द्वारा नहीं परन्तु यीशु पर विश्वास करने के द्वारा। रोमियों 4:1–8 ; गलातियों 2:16 तीतुस 3:5 ।

- कचहरी में दोषमुक्त होना, क्षमा प्राप्त करने के समान नहीं है।
- क्षमा प्राप्त करने का यह अर्थ है कि मैं दोषी हूं , परन्तु मेरा अपराध गिना नहीं गया।
- सिद्ध होने का यह अर्थ है कि मेरा मुकदमा चला और मैं र्निदोष साबित हुआ। और यह सब यीशु ने हमारे लिए किया है।

5. उद्धारकर्त्ता की मृत्यु : मेरा मेल कराया।

इस शब्द का अर्थ है : सही सम्बन्ध की पुनःस्थापना करना।

i) रोमियों 5:10

- हम शत्रु थे , परन्तु परमेश्वर के द्वारा सही और मित्रता के सम्बन्ध में बदल गए। यह सब क्रूस पर हो पाया जहां पाप का मुल्य चुका दिया और हटा दिया।
- पद 11 हमें उसके द्वारा किये गए कार्य को ग्रहण करना है।

ii) कुलुस्सियों 1:20–22

iii) 2 कुरिन्थियों 5:17–21

- सम्पूर्ण रुप से तथा पूर्णतः समाप्त किया गया कार्य जो परमेश्वर ने यीशु मसीह के द्वारा किया।
- हमारे पास ज़िम्मेदारी है, सौंपा गया कार्य है, सब को सुसमाचार सुनाने की सेवकाई है।
- यह संसार के लिए पूरा किया गया कार्य है।
- प्रत्येक व्यक्ति के पास विकल्प है तथा उन्हे इस अवर्णनीय प्रेम के कार्य का जवाब, अपने मन को फिरा कर देना है। परमेश्वर के प्रेम पर विश्वास न करके इस सत्य को त्यागा जा सकता है और इस प्रकार अन्धकार और परमेश्वर के प्रकोप मे बना रहता है। यूहन्ना 3:36

6. उद्धारकर्त्ता की मृत्यु ने मुझे शुद्ध किया।

दो अर्थ :

1. आम इस्तमाल और परिस्थिति से अलग किया, अलग रखा। अर्पित किया गया। निर्गमन 13:2 ; निर्गमन में : दिन, पहाड़, वेदी, और पशु को शुद्ध किया जाता था, “परमेश्वर के लिए अलग रखा।” इब्रानियों 9:19–22 ।

2. चरित्र में शुद्धता – पवित्रता। लैव्यव्यवस्था 20:26

(मै हूं)

I) स्थान मसीह में अलग किया हुआ। उसने कर दिया ! समाप्त कार्य।

i)	प्रेरितों के काम 26:18 ; 20 :32	यह तब हुआ जब धर्मी ठहराया गया।
ii)	1 कुरिन्थियों 1:2	सब विश्वासी सम्मिलित हैं।
iii)	1 कुरिन्थियों 1:30	उसका काम – उसकी ज़िम्मेवारी।
iv)	1 कुरिन्थियों 6:11	समाप्त कार्य। हो चुका है।
v)	2 थिस्सलुनीकियों 2:13	उद्धार का प्रवेश।
vi)	इब्रानियों 10:10 ; 13:12	क्रूस पर पूरा हो चुका।
vii)	कुलुस्सियों 1:22	क्रूस पर पूरा हो चुका।
viii)	1 पतरस 1:2	पहले से चुना और आज्ञाकारिता के लिए प्रेरित करता है।

(बनता हूं)

II) प्रगतिशील मसीह आप में (प्राण) – मेरी ज़िम्मेवारी।

i)	1 पतरस 1:14–16	आज्ञाकारिता के द्वारा। व्यवस्थाविवरण 23:14
ii)	इब्रानियों 10:14	उसके द्वारा किया जा रहा कार्य (पूर्व, वर्त्तमान कार्य) "सिद्ध किया"
iii)	2 कुरिन्थियों 7:1	हमारा कार्य
iv)	2 तीमुथियुस 2:21	हमारा कार्य
v)	1 थिस्सलुनीकियों 4:3–8	यह हमारे लिए उसकी इच्छा है कि करें
vi)	1 यूहन्ना 3:2–3	हमारी इच्छा से आरंम्भ होता है कि हम उसके समान बनें।

7. यीशु मसीह की मृत्यु और उसके लहू ने मुझे चंगा किया।

- ✐ यशायाह 53:4–5
- ✐ मत्ती 8:17
- ✐ 1 पतरस 2:24

घ. यीशु मसीह में विश्वास के समय

क) परमेश्वर व्यक्ति को सिद्ध या धर्मी ठहराता है और उसे अपनी धार्मिकता प्रदान करता है।
रोमियों 3:22, 46 ; 2 कुरिन्थियों 5:21

ख) अब धर्मी बनने पर, पवित्र आत्मा उस व्यक्ति " में " निवास करने आता है।
रोमियों 8:9–11 ; 1 कुरिन्थियों 3:16, 6:19

यह "आत्मा से जन्म" लेना है। यूहन्ना 3:5–8 या
"नया जन्म" पाना है। 1पतरस 1:23 ; तीतुस 3:5

ग) उसी समय हम अन्धकार के वश से "छुड़ा कर" उसके पुत्र के राज्य में "प्रवेश" कर जाते हैं। कुलुस्सियों 1:13

और अब हमें " मसीह में " कहा जाता है। इफिसियों 1:1 ; 2 कुरिन्थियों 5:14

मृत्यु से और " जीवन में " यूहन्ना 5:24 ; इफिसियों 2:1, 5

घ) परमेश्वर की सन्तान बन गए। यूहन्ना 1:12

ङ) "नया हृदय" प्राप्त किया। यहेजकेल 36:26–27

च) परमेश्वर स्वर्ग के राज्य के भेदों को पवित्र आत्मा के प्रकाशन द्वारा प्रकट करता है। मत्ती 11:25–27 ; 13:10–11, 16 ; 16:15–17 ; 1 कुरिन्थियों 2:14

ङ. पाप के लिए केवल यीशु मसीह का लहू ही परमेश्वर को स्वीकृत है।

(1) अनन्त जीवन तथा (2) दैनिक संगति, दोनों के लिए।

1. पापों के न्याय के लिए परमेश्वर की धर्मी मांग को यीशु मसीह के क्रूस पर बहाये गए लहू के द्वारा पूर्णतः सन्तुष्ट कर दिया गया।

रोमियों 3:25–26 ; 1 यूहन्ना 2:2 ; 4:10 यह लहू जगत के पापों के प्रायश्चित्त के लिये है।

2. लहू परमेश्वर के लिए है। निर्गमन 12:13 ; लैव्यव्यवस्था 17:11

3. परमेश्वर की धार्मिकता में उपयुक्त बलिदान होना था अन्यथा वह न्यायी नहीं, यीशु पर विश्वास करने वालों के पापों को क्षमा करने में "न्यायिक रीति से सही" नहीं।

इब्रानियों 2:14–15,17 ।

लैव्यव्यवस्था 16 प्रायश्चित्त का दिन। 14–22, 29–30
केवल महा याजक ही लहू को परमेश्वर के सम्मुख अर्पित करता था।
मत्ती 27:50–51 ; इब्रानियों 9:11–12, 24–26

यीशु मसीह, महायाजक के कार्य करता हुआ, परमेश्वर को पापों के लिए सन्तुष्ट करता है। विश्वास करने वालों के पापों को हटाता है। बन्धनों, मृत्यु और शैतान से मुक्त करता है।

4. लहू के कारण – परमेश्वर की धार्मिकता और अनन्त जीवन पाने के लिए परमेश्वर के सम्मुख पाप अब प्रश्न नहीं है। प्रश्न है : क्या आप ने विश्वास किया, परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह और उसके बहुमूल्य लहू पर भरोसा किया ?

- इब्रानियों 10:19–22 केवल उसके लहू ही हमारी पूर्ति भी करता है।
- 1 पतरस 1:18–19 इसकी उसने जो कीमत दी उसे ग्रहण करें

5. मैं परमेश्वर के सम्मुख सिर्फ लहू के कारण पहुंचता हूं। अपनी योग्यता या कार्यों द्वारा नहीं।

जब मैं पाप करता हूं तो मैं अपने विवेक में दोषी ठहरता हूं और मेरा "दोष लगाने वाला" मुझे

मै निराश हो जाता हूं , पराजित ...... अगर ऐसा है तो, मैं अपनी धार्मिकता और अपने स्वयं के प्रयत्नो को देख रहा हूं और यीशु के लहू पर भरोसा नहीं कर रहा।

मैं क्या करुं ??? मुझे केवल यीशु मसीह के लहू की तरफ ही मुड़ना चाहिए :

क) सिर्फ लहू ही मेरे पापों को धो सकता है :
इब्रानियों 10:10–18 ; 1 यूहन्ना 1:5–10

परमेश्वर के साथ मेरा सम्बन्ध लहू के द्वारा स्थापित हुआ।

परमेश्वर के साथ मेरी संगति लहू के द्वारा बनी रहती है।

केवल यीशु का लहू ही हमारी पूर्ति करता है।

ख) सिर्फ लहू ही मेरे विवेक के अपराध को धो सकता है।
इब्रानियों 9:14 ; 10:19–22

ग) सिर्फ लहू ही “ दोष लगाने वाले ” पर जय पा सकता है। प्रकाशितवाक्य 12:10–11

उसके द्वारा निंधारित मूल्य को हमें स्वीकार करना है : 1 पतरस 1:18–19
“तो हम ऐसे महान उद्धार की उपेक्षा कर के कैसे बच सकेंगे ?”
इब्रानियों 2:3 रोमियों 8:31–34

च. उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह का पुनरुत्थान।

1. 1 कुरिन्थियों 15:4–6, 12–23, 35–38, 42–44, 49–57
2. मत्ती 27:50–53, 62–66 ; 28:6–7, 11–15
3. शिष्यों का पुनरुत्थान के दिन नया जन्म हुआ :
   यूहन्ना 20:19–22 ; रोमियों 6:4
4. शिष्य गए और सुसमाचार का प्रचार किया :
   प्रेरितों के काम 2:24, 31–32 ; 3:15, 26 ; 4:2, 10, 33 ; 5:30; 10:40
   13:30, 33–34, 37 ; 17:31–32 ; 23:6; 24:15 ; 26:23
5. रोमियों 1:4 “सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र घोषित हुआ।”
6. रोमियों 4:25 यह घोषित किया कि उसका बलिदान, उसकी मृत्यु और बहाया गया लहू प्राप्त कर लिया गया है और पापों को हटा दिया गया है।
7. रोमियों 5:10 उसके कोप से बचने के पश्चात अब हम उसके पुनरुत्थान जीवन में निवास के द्वारा बचाये जायेंगे।
8. यूहन्ना 14:19 जो उसके लहू के द्वारा धर्मी ठहराये गयें हैं, अनन्त जीवन के लिए उठाये भी जायेंगे और उसको देखने पायेंगे।

छ. सिंहासन पर विराजमान उद्धारकर्त्ता, यीशु मसीह।

1. फिलिप्पियों 2:6–11 ; इब्रानियों 1:3
2. इब्रानियों 9:21–24 वह अपने लहू को ले कर स्वर्ग के पवित्रस्थान में हमारे लिये प्रवेश किया। इसलिए हम पवित्र स्थान में दाखिल हो सकते हैं।
3. इब्रानियों 10:19
4. इब्रानियों 5:1–5 उसका हारुन की रीति का महायाजकपन का समय और बलिदान समाप्त हो गया। अब उसने मलिकिसिदक के सदृश याजकीय सेवकाई में प्रवेश किया जो कि हमारे लिए मध्यस्थता है। हमारे उद्धार को पूर्ण और समाप्त करता हुआ।
   इब्रानियों 7:25 यूहन्ना 17
   रोमियों 8:34–39 ; 1 युहन्ना 2:1

   सिद्ध याजक ने सिद्ध बलिदान दिया और सिद्ध विषय का निवेदन करता है और हमें सिद्ध उद्धार की ओर ले जाएगा।

ज. उद्धारकर्त्ता से उद्धार को प्राप्त करना।

1. इब्रानियों 2:1–4 यदि हम ऐसे महान उद्धार की उपेक्षा करें तो हम पाप न्याय प्रकोप मृत्यु से बच नहीं सकते।
2. तीतुस 2:11 "परमेश्वर का अनुग्रह सब मनुष्यों के उद्धार के लिए प्रकट हुआ है।
3. प्रेरितों के काम 16:30 "उद्धार पाने के लिए मैं क्या करुं?"
   उत्तर : रोमियों 1:16 उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य, सुसमाचार के सुनने के द्वारा है।
4. रोमियों 10:9–18 विश्वास और पापों का अंगीकार करो। यदि आप विश्वास करते हो, यह होगा :
   - आज्ञाकारिता यूहन्ना 14:15, 21, 23–24 इब्रानियों 5:9 ; 11:6–8
   - पश्चात्ताप – पाप से अपनी पीठ फेर लेना।
     2 कुरिन्थियों 7:9–10 ; लूका 5:32 ; 24:47 प्रेरितों के काम 2:38 ; 11:18
     1 थिस्सलुनीकियों 1: 9–10 2 पतरस 3:9
5. यूहन्ना 1:12 विश्वास और पापों का अंगीकार करना, यीशु को ग्रहण करना है।
6. जब कोई व्यक्ति विश्वास करता और ग्रहण करता है, वह "नया जन्म" पाता है।
7. भजन संहिता 116:1–13

झ. उद्धार का भूत, वर्त्तमान और भविष्य।

1. मैं बचाया गया हूं। अनन्त जीवन

   क. पापों के दण्ड से – मृत्यु इफिसियों 2:1–9 ; यूहन्ना 5:24

   ख. कब ? जब मैंने सुसमाचार में विश्वास किया। रोमियों 1:16

ग. मेरा काम – विश्वास रोमियों 3:22, 24, 26, 28 ; 4:5
1 कुरिन्थियों 1:21 2 तीमुथियुस 1:9 तीतुस 3:5

घ. यह है : “ धर्मी ” ठहराये जानें का सिद्धांत
रोमियों 5:9 उसके लहू के द्वारा। 5:10 उसकी मृत्यु के द्वारा

ङ. आप “ मसीह में ” यूहन्ना 10:28–29 रोमियों 8:1
1 कुरिन्थियों 1:2, 30 ; 15:22

2. मै बचाया जा रहा हूं। दिन प्रतिदिन का उद्धार

क. पापों की शक्ति से : रोमियों 6:2–23

ख. कब? जब मैं अपनी क्रूस को उठाता हूं। लुका 9:23

ग. मेरा काम – आज्ञा पालन करना 1 पतरस 1:22 ; 2:2 ; लूका 6:46–49

घ. यह है : “ पवित्रता ” का सिद्धांत
- i) 1 कुरिन्थियों 1:18
- ii) 2 कुरिन्थियों 2:15
- iii) फिलिप्पियों 2:12
- iv) 1 तीमुथियुस 4:16
- v) याकूब 1:21

ङ. “ मसीह आप में ” गलातियों 2:20 ; 4:19

पाप शैतान को आक्रमण का अवसर देता है : लूका 22:31 ; इफिसियों 4:27

वह आप पर आक्रमण कर सकता है और बहुत बड़ा नुकसान, परेशानी या चोट पहुंचा सकता है परन्तु आप अपना अनन्त जीवन नहीं खोते क्योंकि यीशु मसीह अपने लहू के द्वारा जो कार्य उसने आपके लिए समाप्त कर दिया निवेदन करता है, वह हमारा महायाजक, हमारी मध्यस्थता करता है।

3. मेरा उद्धार हो जाएगा। रोमियों 13:11 ; इब्रानियों 9:28 ; 1 पतरस 1:5

क. पापों की उपस्थिति से : मेरी देह के छुटकारे के द्वारा
- i) मृत्यु के द्वारा। फिलिप्पियों 1:21–24 2 कुरिन्थियों 5:6–8
- ii) प्रभु के आगमन के द्वारा : 1 थिस्सलुनीकियों 4:13–18
  1 कुरिन्थियों 15:50–57 ; 35–44रोमियों 8:11, 16–23

ख. कब ? अन्तिम तुरही पर।

ग. मेरा काम : सुरक्षित रहना/धीरज धरना। मत्ती 10:22 ; 24:13 रोमियों 2:7 ; 5:3 ; 8:25
रोमियों 8:25 ; 15:4 ; 2 थिस्सलुनीकियों 1:4 ; 1 तीमुथियुस 6:11 ; 2 तीमुथियुस 3:10
इब्रानियों 10:32–39 ; याकूब 1:12 ; 2 पतरस 1:5–6 ; प्रकाशितवाक्य 3:10।

घ. यह है : “ महिमा – प्राप्ति ” का सिद्धांत। फिलिप्पियों 3:20–21

झ. जिसका आरंम्भ परमेश्वर करता है, वह उसे समाप्त करता है

प्रकाशितवाक्य 21:1–8 ; रोमियों 8:29–30 ; इफिसियों 1:9–11 ; इब्रानियों 12:2

समाप्त